ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

द्युमन्तं शुष्ममाभर। सामवेद 1325

हे शक्ति दायक प्रभो ! हमें शुभ शक्ति दो।
O the Bestower of strength! Bistwo on us the strength that will bring glory.

वर्ष 38, अंक 3 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 17 नवम्बर, 2014 से रविवार 23 नवम्बर, 2014
विक्रमी सम्वत् 2071 सृष्टि सम्वत् 1960853115
दयानन्दाब्द : 191 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

आचार्य बलदेव जी के संकल्प, आर्यों के संघर्ष, शहीद सोनू के बलिदान को नमन्

पुलिस के साथ लम्बे संघर्ष के बाद अन्ततः रामपाल गिरफ्तार

आश्रम होगा सील : राष्ट्र द्रोह का मुकदमा दर्ज : अनेक समर्थक गिरफ्तार

अन्ततः अपराधी की सच्चाई सामने आई : पाखण्ड के खिलाफ आर्यसमाज का अभियान जारी रहेगा – ब्र. राजसिंह आर्य

प्रत्येक आर्यसमाज अपने क्षेत्र में पाखण्ड के खिलाफ सम्मेलन करके जनता को जागरुक करे– प्रकाश आर्य

जनता को जागरुक करना होगा : पाखण्डी बाबाओं के खिलाफ कड़े कानूनों बनें – आर्यसमाज की मांग

सभा अधिकारियों ने टीवी चैनलों (IBN-7, NDTV, VIP News, Sahara News) पर रखा आर्यसमाज का पक्ष

आर्य महासम्मेलनों की शृंखला में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन – 2014 सिंगापुर सम्पन्न

खुले पार्क में सैकड़ों महानुभावों ने यज्ञ में दी आहुति

जिस भावना से आर्य समाज का निर्माण हुआ उन कार्यों को सिंगापुर में आगे भी जारी रखेंगे – ओ०पी० राय (प्रधान आर्य समाज सिंगापुर)

आर्यसमाज सिंगापुर का शताब्दी समारोह एवं डी.ए.वी हिन्दी स्कूल सिंगापुर का उत्सव भी साथ ही आयोजित किया गया

सिंगापुर की पावन धरा पर सम्पूर्ण विश्व की शीर्षस्थ आर्य समाजों में विशिष्ट स्थान प्राप्त आर्य समाज सिंगापुर ने अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन के साथ आर्य समाज सिंगापुर का शताब्दी समारोह एवं डी.ए.वी. हिन्दी स्कूल सिंगापुर का वार्षिकोत्सव भी बड़े धूम-धाम से सम्पन्न किया। जिसमें विश्व के अनेक आर्य समाजों के प्रतिनिधियों के साथ भारत (आर्यावर्त्त) के आर्य समाज के राष्ट्रीय अधिकारियों एवं प्रतिनिधियों ने समारोह में उत्साहपूर्वक भाग लिया। आर्य समाज सिंगापुर में पहुँचने के पश्चात् देश विदेश के सभी आगन्तुक महानुभावों का भव्य स्वागत किया गया। यह समारोह प्रातः 1 नवम्बर से 2 नवम्बर 2014 रात्रि तक चला। महासम्मेलन में विश्व के विभिन्न देशों के आर्य समाज के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। जिसमें अमेरिका, कनाडा, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, इंग्लैंड, थाईलैंड, नेपाल, फीजी, मॉरीशस, एवं भारतवर्ष से आए आर्य समाजों के प्रतिनिधियों विद्वानों एवं महानुभावों ने उपस्थित रह कर सम्मेलन की शोभा बढ़ाई जिसमें मॉरीशस से 100 प्रतिनिधियों ने उपस्थिति अंकित की जबकि देवभूमि भारतवर्ष के विभिन्न प्रान्तों से लगभग 300 प्रतिनिधियों एवं आर्यों ने सिंगापुर को भारतवर्ष आर्यों की भूमि होने का गौरव-भान कराया जिनमें विभिन्न प्रान्तों पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, बिहार,

आर्य समाज सिंगापुर में जहां आर्य समाज की स्थापना को सौ वर्ष पूरे हो चुके हैं वहीं पर डी.ए.वी. स्कूल सिंगापुर में हिन्दी शिक्षण के कार्य को भी सौ वर्ष हो चुके है। इस संस्था के माध्यम से हिन्दी भाषा का ज्ञान अर्जन एवं प्रचार और प्रसार किया जा रहा है। इस संस्था में 3200 छात्र हिन्दी अध्ययन कर रहे है। आर्यों के लिए यह गौरव की बात है।

(बाएं) दीप प्रज्ज्वलित करके अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सिंगापुर का विधिवत उद्घाटन करते महाशय धर्मपाल जी साथ में हैं सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल, मन्त्री श्री प्रकाश आर्य, वैदिक विद्वान भारतीय संसद सदस्य डॉ. सत्यपाल सिंह, सिंगापुर समाज के प्रधान श्री ओ. पी. राज जी एवं सिंगापुर के संसद सदस्य सरदार इन्द्रजीत सिंह जी। (दाएं) विभिन्न देशों से पधारे प्रतिनिधियों से भरा आर्य महासम्मेलन के आयोजन स्थल का पण्डाल।

– शेष पृष्ठ 4 पर

वेद-स्वाध्याय

पत्नी

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

मूर्द्धासि राड् ध्रुवासि धरुणा धत्र्यसि धरणी।
आयुषे त्वा वर्चसे त्वा कृष्यै त्वा क्षेमाय त्वा।।
यजुर्वेद : अध्याय १४ मन्त्र २१

अर्थ—हे स्त्रि! जो तू **(मूर्धासि)** सूर्य के तुल्य मूर्धन्य, उत्तम **(असि)** है। **(राट्)** ज्ञान से प्रकाशित बुद्धि वाली है **(ध्रुवासि)** निश्चल मति है **(धरुणा)** भोजन-छादन से सबकी पुष्टि करने वाली है **(धरणी)** पृथ्वी के समान **(धर्त्री असि)** सारे परिवार को सम्भालती है। मैं **(त्वा)** तुझे **(आयुषे)** दीर्घ जीवनार्थ **(वर्चसे)** अन्न के लिये, **(कृष्यै)** खेती करने या उत्तम सन्तान प्राप्ति हेतु **(क्षेमाय)** अपनी रक्षा के लिये सब ओर से ग्रहण करता हूँ।

बृहदारण्यकोपनिषद् (१.४.३) में कथा आती है —**आत्मैवेदमग्र आसीत् पुरुषविधः** सृष्टि के प्रारम्भ होने से पहले आत्मा अकेला था। वह ऐसा था जैसे द्विदल चना या सीप के दो खण्ड परस्पर मिले हुये हों। उसने अपने शरीर को दो टुकड़ों में पटक दिया जिससे पति और पत्नी रूप दो भाग बन गये। पुरुष के सामने का आकाश स्त्री से ही पूरा होता है। बिना स्त्री के पुरुष अधूरा है। इसीलिये स्त्री को अर्धांगिनी कहते हैं जो सुख-दुःख में पुरुष का साथ देती है।

नास्ति भार्या समोबन्धुर्नास्ति भार्या समा गतिः। नास्ति भार्या समो लोके सहायो धर्म संग्रहे॥
महा० शान्ति० १४४.१६

स्त्री के समान कोई दूसरा बन्धु, मित्र नहीं है। भार्या के समान दूसरी गति नहीं है और धर्मसंग्रह में धर्म पत्नी के सदृश कोई दूसरा सहायक नहीं है।

कार्येषु मन्त्री करणेषु दासी भोज्येषु माता शयनेषु रम्भा। धर्मानुकूला क्षमया धरित्री षाड्गुण्यमेतद् हि पतिव्रतानाम्॥

सुगृहिणी में छः गुण होते हैं—१. कोई कार्य करते समय परामर्श देने वाले मन्त्री के समान पति को परामर्श देती है। २. कार्य करने में दासी=सेविका के समान, ३. भोजन खिलाने में माता के समान, ४. पति को अप्सरा के समान सुख देने वाली, ५. धर्माचरण में पति के साथ सहयोगिनी और ६. क्षमा में भूमि के समान। अपने गुण, कर्म, स्वभाव के अनुकूल पत्नी यज्ञादि में सहयोग देकर धर्म, पुत्रोत्पत्ति द्वारा अर्थ संग्रह और सभी सुखों को देने वाली होती है। इसलिये अक्षयसुख प्राप्ति के लिये प्रयत्नपूर्वक गृहस्थाश्रम धारण करना चाहिये जिसमें धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों की प्राप्ति होती है।

मन्त्र में कहा है—**१. मूर्धासि राट्**—अपने बुद्धि-कौशल और सद्गुणों से यह सूर्य के समान देदीप्यमान हो रही है। जब यह श्वसुर-गृह में आती है तो सास-श्वसुर इसकी स्तुति करते हुये कहते हैं।

अदित्यै रास्नासीन्द्राण्याऽउष्णीषः। पूषासि घर्माय दीष्व॥ यजुः० ३८.३॥

हे पुत्रवधू! तू **(आदित्यै रास्नासि)** पृथिवी की बागडोर है, नित्य विज्ञान को देने वाली है। **(इन्द्राण्यै)** परमैश्वर्य, नीति के लिये **(उष्णीषः)** पगड़ी तुल्य है, तू घर की पाग है **(पूषा असि)** भूमि के तुल्य पोषण करने वाली है सो तू **(घर्माय)** इस गृहस्थ यज्ञ में **(दीष्व)** अपना मन लगा।

२. ध्रुवासि धरुणा निश्चल मति और सबका पोषण करने वाली है। तुनक मिजाजी और अस्थिर चित्त होना स्त्री का अवगुण है। जो थोड़ी-सी बात में आपे से बाहर हो जाये अथवा-

क्षणे रुष्टः क्षणे तुष्टः रुष्टस्तुष्टः क्षणे क्षणे। अव्यवस्थितचित्तस्य प्रसादोऽपि भयंकरः॥

थोड़ी देर में प्रसन्न और अप्रसन्न होने का स्वभाव जिसका है उसकी कृपा-दृष्टि भी भयंकर होती है। सुयोग्य गृहिणी अपनी स्थिर मति से परिवार के सभी सदस्यों का मन अपनी ओर आकर्षित कर लेती है। सास-श्वसुर तो उसकी प्रशंसा करते हुए कहते हैं—हमारे घर में तो साक्षात् लक्ष्मी ही पुत्रवधू बनकर आई है जो हमारी सेवा में कोई कौर-कसर नहीं रहने देती।

३. धर्त्री असि धरणी—जैसे भूमि सबको धारण करती है वैसे ही यह देवी माता के समान सबको धारण करने वाली है। कोई कुछ कहता भी है तो यह उसे अनसुना कर देती है। क्षमा करना इसके स्वभाव में है। यह सबकी सुविधा और अनुकूलता वाला भोजन बनाती है। घर को साफ रखना इसके स्वभाव में है। दिन भर व्यस्त रहने पर भी प्रसन्नवदन रहती है। इसने घर को स्वर्ग बना दिया है। यद्यपि हमें और लोग भी अपनी कन्या के साथ पर्याप्त दहेज देने वाले थे परन्तु हमने प्रथम साक्षात्कार में ही इसे अपनी पुत्रवधू मान इसकी गोद भर दी और दहेज की मांग ही नहीं की। क्योंकि भगवती वेदवाणी कहती है—

मक्षू कनायाः सख्यं नवग्वा ऋतं वदन्त ऋतयुक्तिमग्मन्। द्विबर्हसो य उप गोपमागुरदक्षिणासौ अच्युता दुदुक्षन्॥
ऋ० १०।६१।१०

(नवग्वा) नवीन शिक्षित स्नातक **(ऋतं वदन्त)** सत्य प्रतिज्ञा करते हुये **(कनायाः)** कन्या के सम्बन्ध को **(मक्षू)** तुरन्त **(ऋतयुक्तिम् अग्मन्)** स्वीकार कर लेते हैं। **(द्वि बर्हसः)** वे दोनों कुलों के मान-सम्मान को बढ़ाने वाले **(ये गोपम् उप आगुः)** जो कि जितेन्द्रिय होते हैं **(अदक्षिणासः)** बाह्य धन की अपेक्षा न करते हुये शाश्वत सुख की इच्छा करते हैं।

४. आयुषे त्वा—हे पत्नि! मैं दीर्घ-जीवन के लिये तेरा पाणिग्रहण स्वीकार करता हूँ। तू घर में भोजन इस विधि से बनाना जो औषधवत् सबको आरोग्य देने वाला हो। जिसे खाकर चित्त में प्रसन्नता हो और रुचि बनी रहे। क्योंकि स्वास्थ्य के लिये भोजन का प्रथम स्थान है। हित, मित और ऋत अर्थात् ऋतु के अनुकूल हितकारी भोजन करने वाला रोगी नहीं होता। इसीलिये स्त्रियों को पाकशास्त्र और आयुर्वेद का ज्ञान होना चाहिये।

५. वर्चसे त्वा—मैं अन्न और यश की प्राप्ति के लिये तुझे पत्नी रूप में स्वीकार करता हूँ। घर में व्यवस्था इस भाँति की जाये कि किसी वस्तु का अभाव न होने पाये। इसके अतिरिक्त हंस-हंसिनी के समान हमारी जोड़ी की लोग प्रशंसा करें और कहें कि तुम धन्य हो जो ऐसी सौभाग्यवती धर्मपत्नी के स्वामी हो।

६. कृष्यै त्वा—विवाह का फल उत्तम सन्तान की प्राप्ति है। जिस घर में छोटे-छोटे बच्चों की किलकारियाँ नहीं गूँजती वे श्मशान तुल्य जानने चाहियें। जैसे किसान लोग भूमि को जोत कर उसमें ऋतु के अनुसार बीज बोते हैं ऐसे ही उत्तम सन्तान के लिये हम दोनों को इसके लिये तैयारी करनी होगी। संयम का जीवन बिताना होगा। माता-पिता का असली धन उसकी सन्तान ही है और उसकी प्राप्ति के लिये तपस्या तथा अन्य विधि-विधान का परिचय होना आवश्यक है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस कार्य में तुम मेरा पूर्ण सहयोग करोगी।

७. क्षेमाय त्वा—अप्राप्त की प्राप्ति योग और प्राप्त की रक्षा करना क्षेम कहलाता है। पत्नी का यह कर्त्तव्य है कि वह हर समय अपने पति की सुरक्षा में तत्पर रहे। उसे मद्यपान, जुआ खेलना और परस्त्रीगमन से सदैव रोके और कहे—**वेश्शीनां त्वा पत्मन् आ धूनोमि** (यजुः० ८.४८) हे पतनोन्मुख पति! पवित्र आचार-विचार, विदुषी, मधुर भाषिणी परस्त्रियों की ओर जो तेरी कुदृष्टि है उससे तुझे छुड़ाती हूँ। हे पति! संयम और सदाचारमय जीवन ही सुखों का देने वाला और व्यभिचार अत्यन्त दुःखदायक और कुल का नाश करने वाला है। धन्य हैं ऐसी देवियाँ!

- *क्रमशः*

लोकसेवा ही ईश्वर की सच्ची सेवा है

- स्व. पं. रामचन्द्र देहलवी

आज कल लोग ईश्वर की उपासना के लाभ पूछते हैं। मैं ऐसे लोगों के विश्वास के लिए यह मजमून रख रहा हूँ कि हमारे पास ईश्वर की उपासना का क्या अर्थ है। यदि आप किसी मुसलमान से यह प्रश्न करें तो वह कहेगा कि हम खुदा की इबादत करते हैं। "इबद" का अर्थ बदा है अर्थात् वे अपने खुदा के सामने अपने बदा होने की प्रतिज्ञा करते है। और उससे शब्द बन्दगी निकला है लोग आजकल प्रायः एक दूसरे को बन्दगी करते हैं। तो ऐसा कह कर अपने आपको गुलाम बनाया जाता है। इस लिए कम से कम हिन्दुओं को ऐसा शब्द नही कहना चाहिए। अब आप एक सनातनी से पूछें तो वह कहेगा कि हम परमात्मा की भक्ति करते हैं। भक्ति का अर्थ सेवा है। परन्तु आर्य समाज की उपासना का अर्थ है परमात्मा के निकट होना। परमात्मा के नजदीक रहने का क्या है मतलब? इसके साथ ही मुसलमानों की इबादत और सनातनियों की भक्ति इन तीनों चीजों पर रोशनी डालूँगा।

मैंने एक बार दीनानगर के एक शास्त्रार्थ में मुसलमान भाई से पूछा कि आप बतलाए कि इस नमाज का क्या अर्थ है। इससे क्या लाभ है? उसने फरमाया कि हम खुदा का अदब बजा लाते है। मैंने उनसे पूछा कि क्या खुदा इससे प्रसन्न हो जायेगा, क्या वह बाह्य चीजों से प्रसन्न होता है या आभ्यांतरिक भाव देखकर? यदि आन्तरिक भाव देख कर तो बाह्य दिखावट का क्या लाभ? इसके अतिरिक्त मैंने यह प्रश्न किया कि सचमुच खुदा प्रसन्न होगा, यदि वह खुश होगा तो उसमें तबदीली आ गई। आपने एक कुरान शरीफ की आयत पढ़ कर इस बात को दर्शाया कि खुदा ने अपने बन्दों को इबादत के लिए उत्पन्न किया उसे किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं इस लिए उस में तबदीली नहीं आती । तो फिर खुश करने का क्या अर्थ? वह भाई उससे आगे न चल सका। अब आर्य समाज की उपासना को ले। हम पर यह प्रश्न किया जाता है कि उसके समीप जाने का क्या अर्थ है? क्या परमात्मा दूर है जो इसके निकट जाएं। हमारा कहना यह है कि परमात्मा और जीव के अन्दर मकानी (देशिक) या जमानी (कालिक) कोई फासला नहीं। मतलब यह है कि यदि हम परमात्मा के गुणों को अपने अन्दर धारण कर लें तो हम उसके निकट चले जायेंगे। परमात्मा हर स्थान पर विद्यमान है। वह जीव के साथ रहता है। हम में और उसके मध्य इलमी फासला है। उदाहरण के रूप में कई वस्तुएं हमारे निकट होती हैं परन्तु हमें पता नहीं चलता। कई बार लेखनी कान पर होती है हम उसे मेज पर ढूँढ़ते हैं। गाजियाबाद में एक बार मैंने अंधकार में अपना उपनेत्र (ऐनक) पगड़ी में रख दिया। जब ऐनक का ख्याल आया तो हम इधर-उधर ढूँढते रहे। अन्त में सिर की पगड़ी में से मिल गई। मतलब यह कि यह इलमी भूल थी परमात्मा जाहिलों (मूर्खों) से दूर है और आकिलों (बुद्धिमानों) के समीप है।

- शेष पृष्ठ 6 पर

'सच्ची आध्यात्मिकता'

आज-कल आध्यात्मिक या Spirituality शब्द का काफी प्रयोग किया जाता है। आध्यात्मिकता क्या है, इस पर यदि किसी से प्रश्न किया जाये तो हमें लगता है कि सबसे उत्तर अलग-अलग अर्थात् एक दूसरे के पूरक न होकर परस्पर विरुद्ध भी हो सकते हैं। अत: सच्ची आध्यात्मिकता पर निष्पक्ष रूप से विचार करना प्रासंगिक एवं आवश्यक हैं, हम अनुभव करते है कि आत्म तत्व का अध्ययन, विवेचन व निर्धारण ही आध्यात्म का उद्देश्य एवं इस प्रकार के अध्ययन से जो परिणाम सामने आते हैं वह सत्य ज्ञान ही अध्यात्म या आध्यात्मिकता है। जब हम अध्यात्म का अध्ययन आरम्भ करते हैं तो हमें विदित होता है कि यह सारा संसार चेतन व अचेतन दो तत्वों में बंटा हुआ है। अचेतन तत्व के लिए जड़ व निर्जीव शब्दों का प्रयोग भी किया जाता है। चेतन तत्व को आत्म तत्व के नाम से भी जाना जाता है। यदि हम में एक देशी चेतन तत्व जीव पर विचार करें तो हम देखते हैं कि हमारे अनेक शब्द कहीं न कहीं व किसी न किसी रूप में इससे जुड़े हैं। कुछ शब्द हमारे ध्यान में आते हैं वह हैं- जीव, आत्मा, जीवात्मा, जैविक, जन्मा, अजन्मा, जीव-जन्तु, ज्ञान व ज्ञानी, जिज्ञासा। जीवात्मा के अतिरिक्त एक अन्य चेतना तत्व जो सर्वव्यापक, एकरस, निरवयव व सर्वज्ञ है, वह परमात्मा है। हम अपनी आंखों से ब्रह्माण्ड को देखते हैं जिससे सूर्य, चन्द्र, पृथिवी, नक्षत्र, अग्नि, वायु, जल, आकाश, वन-उपवन, पर्वत-मैदान आदि है। सूर्य अपनी धूरी पर घूमकर सौर मण्डल के अन्य सभी ग्रहों व उपग्रहों को गति प्रदान कर रहा है। पृथिवी अपनी धूरी पर घूमने के साथ सूर्य की परिक्रमा कर रही है और चन्द्र अपनी धूरी पर घूमने के साथ पृथिवी की परिक्रमा कर रहा है। अमावस्या की रात्रि में आकाश में नक्षत्र व तारें आदि जगमगाते दिखते हैं तो यह दृश्य देखकर मन में प्रश्न उत्पन्न होता है कि यह सब कैसे अस्तित्व में आये हैं? दो ही उत्तर हैं, प्रथम कि यह स्वयमेव बना और दूसरा कि एक सत्य, चेतन, सर्वव्यापक, निराकार, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ सत्ता के द्वारा बनाया गया है। स्वयमेव बना है, इसका हमारी बुद्धि खण्डन कर बताती है कि- संसार में अनादि व नित्य तीन पदार्थों- ईश्वर, जीव व प्रकृति के अतिरिक्त कुछ भी स्वयमेव नहीं बनता। प्रत्येक सत्तावान् निर्मित वस्तु के तीन कारण होते हैं जिनमें प्रथम निमित्त कारण, दूसरा उपादान कारण और तीसरा साधारण कारण होता है। निमित्त कारण चेतन होता है। हम यह लेख लिख रहे हैं तो हम इस लेख के निमित्त कारण हैं। उसका उपादान कारण हमारा कम्प्यूटर, हमारा हिन्दी-अंग्रेजी का टंकण ज्ञान आदि है। साधारण कारणों में हमारी मेज, कुर्सी, विद्युत आदि को ले सकते हैं।

इसी प्रकार से इस ब्रह्माण्ड के परिप्रेक्ष्य में जब हम निमित्त कारण पर विचार करते हैं तो सबसे प्रबल विचार व तर्क यह सामने आता है कि इस जगत का निमित्त सृष्टिकर्ता सर्वशक्तिमान् ईश्वर है जिसमें पूर्व लिखित गुण विद्यमान है। महर्षि दयानन्द ने चारों वेदों से सृष्टिकर्ता ईश्वर के कुछ विशेष गुणों को संग्रहीत कर उन्हें आर्य समाज के दूसरे नियम में स्थान दिया है। इसी प्रकार से उन्होंने ईश्वर के विषय में स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश तथा आर्योद्देश्यरत्माला में भी ईश्वर के कुछ प्रमुख गुणों पर संक्षेप में प्रकाश डाला है। हम यहां तीनों को प्रस्तुत करने का लोभ संवरण नहीं कर पा रह हैं। प्रथम आर्य समाज का दूसरा नियम प्रस्तुत है। यह है-**"ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र, व सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।"** इस नियम में ईश्वर के 23 गुणों वा विशेषणों का वर्णन है वह यथार्थ व सत्य है क्योंकि इनका सृष्टि में प्रत्यक्ष हो रहा है। कोई वैज्ञानिक भी सृष्टि रचना में इन गुणों की सत्ता के होने से इनकार नही कर सकता अर्थात् यह नियम ज्ञान व विज्ञान सम्मत है। संसार में प्रचलित सभी मत-मतान्तरों की इन गुणों के विपरीत ईश्वर सम्बन्धी सभी मान्यतायें पूर्णत: असत्य व मिथ्या है। यह बात हम ज्ञान-विज्ञान की पोषक अपनी बुद्धि के आधार पर विचार व चिन्तन के आधार पर कह रहे हैं और ऐसा ही महर्षि दयानन्द व हमारे सभी ऋषि-मुनियों ने किया व माना है। प्रत्येक पाठक को अपनी अन्ध श्रद्धा व विश्वास को कुछ देर के लिए पृथक् रखकर इस नियम पर विचार करना चाहिए। पूरा सत्यार्थ प्रकाश एक दो व तीन बार पढ़कर आप इस ब्रह्माण्ड के अधिकांश रहस्यों से परिचित हो सकते हैं। यदि किसी को इस नियम का ज्ञान नहीं है या इस पर शंका है तो इसका कारण अज्ञानता, अन्ध श्रद्धा व स्वाध्याय की अपवृत्ति है जो सत्य के ज्ञान व निर्धारण में बाधक है।

अब हम सत्यार्थ प्रकाश के 'स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश' प्रकरण से ईश्वर विषयक महर्षि दयानन्द के विचारों को प्रस्तुत करते हैं- "ईश्वर कि जिसको ब्रह्म, परमात्मादि नामों से कहते हैं, जो सच्चिदानन्दादि लक्षणयुक्त है जिसको गुण, कर्म, स्वाभाव, पवित्र हैं जो सर्वज्ञ, निराकार, सर्वव्यापक, अजन्मा, अनन्त, सर्वशक्तिमान, दयालु, न्यायकारी, सब सृष्टि का कर्त्ता, धर्त्ता, हर्त्ता सब जीवों को कर्मानुसार सत्य से फलप्रदाता आदि लक्षणयुक्त परमेश्वर है, उसी को मानता हूं।" महर्षि दयानन्द के लघु ग्रन्थों में एक ग्रन्थ आर्योद्देश्यरत्नमाला है जिसमें उन्होंने 100 विषय लिख कर उन पर सारगर्भित रूप से प्रकाश डाला है। इस ग्रन्थ में पहला विषय ईश्वर ही को लिया गया है और इस पर प्रकाश डालते हुए वह लिखते हैं- "जिसके गुण-कर्म-स्वभाव और स्वरूप सत्य ही हैं, जो केवल चेतनमात्र वस्तु है तथा जो एक, अद्वितीय, सर्व शक्तिमान, निराकार, सर्वत्र व्यापक, अनादि और अनन्त, सत्य गुणवाला है, और जिसका स्वभाव अविनाशी, ज्ञानी, आनन्दी, शुद्ध, न्यायकारी, दयालु और अजन्मादि है, जिसका कर्म जगत् की उत्पत्ति, पालन और विनाश करना तथा सब जीवों का पाप-पुण्य के फल ठीक-ठीक पहुँचाना है, उसी को ईश्वर कहते हैं।" वेदों के चुने हुए मन्त्रों की आध्यात्मिक व्याख्या महर्षि दयानन्द ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ आर्याभिविनय में की है। यह ग्रन्थ भी आध्यात्मिक रूचि बनाने, बढ़ाने व आध्यात्मिक लाभ के लिए उपयोगी है। इस ग्रन्थ में ईश्वर से सार्थक प्रार्थनाएँ की गई हैं जिसको एक बार पढ़ने पर बार-बार पढ़ने का मन होता है। अध्यात्म रस व आनन्द के पिपासुओं को समय-समय पर इसका रसपान अवश्य करना चाहिए, इससे वह सुख प्राप्त होता है जो धन आदि की प्राप्ति से किसी को कभी नहीं हुआ। यहां हम एक अन्य महत्वपूर्ण तथ्य का उल्लेख भी करना चाहते हैं जिसे महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के प्रथम नियम में प्रस्तुत किया है। तथ्य यह है कि "सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।" इसका सरल अर्थ है कि सब सत्य विद्याओं तथा सृष्टि के समस्त पदार्थों का आदि मूल origin and root ईश्वर है। संसार के सभी वैज्ञनिकों के लिए सिद्धान्तों को जानना और मानना परम कल्याणकारी हो सकता है।

यह तो ईश्वर के स्वरूप व उसके निर्धारण पर विचार प्रस्तुत किये है। अब हम कौन हैं और क्या हैं? यह संसार का सबसे बड़ा और मौलिक प्रश्न है जिसका उत्तर केवल वेदों से ही मिलता है। हम सब जानते हैं कि हम एक चेतन सत्ता हैं जिसका प्रमाण हमें सुख व दु:ख की अनुभूति व इनका ज्ञान होना है। निर्जीव व जड़ पदार्थों को सुख व दु:ख का ज्ञान नहीं होता है। चेतन तत्व या पदार्थ उसे कहते हैं जिसका पहला गुण ज्ञान होता है और दूसरा उस ज्ञान के अनुसार कर्म, क्रिया या गति करना। अत: हम इन गुणों के कारण जीवात्मा, जीव या चेतन तत्व हैं। विचार करने पर हम यह भी पातें है कि हम एकदेशी (अत्यन्त सीमित परिवेश वाले) हैं, सर्वव्यापक नहीं हैं। हम सुख को पसन्द करते हैं दु:ख को नहीं। हम अल्पज्ञ अर्थात् सीमित ज्ञान वाले हैं, सर्वज्ञ या सब कुछ जानने वाले नहीं हैं। हमारी शक्ति सीमित है असीमित नहीं अथवा हम अपने आप को सर्वशक्तिमान नहीं कह सकते। हम जन्म-मरण धर्मा हैं यह भी निर्विवाद सत्य है। हमें जन्म लेने, मनुष्य, पशु, पक्षी आदि योनि में से किसी एक को भी प्राप्त करने की छूट नहीं है, यहां हम विवश हैं। यहां तक कि हम देश, काल व अपने माता-पिता भी तय नहीं कर सकते। यह सब ईश्वर के आधीन है। ईश्वर इस मायने में स्वाधीन और हम पराधीन हैं। ईश्वर यद्यपि स्वाधीन है परन्तु वह भी अनुशासन व नियमों में बंधा हुआ है। वह स्वेच्छाचारी नहीं है। जो जैसा कर्म करता है उसे वैसा फल मिलता है। अच्छा कर्म पुण्य कहलाता है और उससे सुख मिलता है, बुरा कर्म पाप कहलाता है और उससे हमें दु:ख मिलता है। हम अल्पज्ञ होने के कारण राग, ईर्ष्या, द्वेष, सुख, दु:ख, निमेष-उन्मेष, इन्द्रिय अन्तर विकारों से आबद्ध है। इन्द्रिय अन्तर्विकारों में राग, द्वेष, काम, क्रोध, लोभ व मोह आदि दुर्गुण आते हैं जिनसे हमें आध्यात्मिक व सांसारिक जीवन में हानि होती है। विचार करने पर यह भी ज्ञान होता है कि हम अनादि, नित्य, अजन्मा व अत्यन्त सूक्ष्म परिमाण वाले हैं अर्थात् हमारी कभी उत्पत्ति नहीं हुई, हम कभी मरेंगे या नष्ट नहीं होंगे और हमारा अस्तित्व सदा बना रहेगा। यह भी एक तथ्य है कि हमें ईश्वर ने नहीं बनाया है और न ही ईश्वर को किसी ने बनाया है। इन दोनों व प्रकृति का अस्तित्व स्वयं सिद्ध है अर्थात् तीनों 'नित्य' है। अध्यात्म का अध्ययन कर हमें विवेक की प्राप्ति होती है जिससे हम दुर्गुणों से बचते हैं और आत्मिक उन्नति करते हैं। यह कुछ हमने जीवात्मा अर्थात् 'मैं कौन हूं और क्या हूं?' प्रश्न पर विचार कर जाना है। ऐसा ही ज्ञान हमें वेदों, उपनिषदों, दर्शनों, मनुस्मृति, गीता, रामायण व महाभारत आदि में मिलता है।

ईश्वर जीवात्मा व प्रकृति को संक्षेप में जान लेने के बाद अब हमें अपने जीवन के उद्देश्य के बारे में जानना है। हम अधिक विस्तार में न जाकर संक्षेप में कहना चाहते हैं कि भोग व अपवर्ग ही जीवन के उद्देश्य हैं। भोग में सुख व दु:ख आते हैं और अपवर्ग में दु:खों की सर्वथा निवृत्ति अर्थात् जन्म व मरण के चक्र से अवकाश के साथ 31 नील 10 अरब 40 खरब वर्षों के लिए पूर्ण आनन्द व सुख की अवस्था की प्राप्ति होती है। मोक्ष अवस्था के तर्क संगत व प्रमाणों से

- शेष पृष्ठ 6 पर

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा
के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

प्रथम पृष्ठ का शेष

बंगाल, असम, उत्तराखण्ड, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, म. प्रदेश, उड़ीसा, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, कर्नाटक, हिमाचल प्रदेश, पाण्डेचेरी, गोवा, चण्डीगढ़ एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली से आर्य महानुभाव बड़ी संख्या में सिंगापुर अंतर्राष्ट्रीय महासम्मेलन में पहुँचे।

1 नवम्बर 2014 को प्रात: आचार्य प्रभामित्र के ब्रह्मत्व में तथा आचार्य नरेन्द्र शास्त्री पुरोहित आर्य समाज सिंगापुर एवं ब्र० राजसिंह आर्य (प्रधान दिल्ली सभा) जी के विशेष योगदान से यज्ञ प्रारम्भ हुआ, जिसमें सभी आगन्तुक महानुभावों ने आहुति प्रदान कर धर्म लाभ प्राप्त किया। यज्ञोपरान्त माननीय कृपाराम शर्मा (एम. पी.) एवं श्री ओ०पी० राय प्रधान आर्य समाज सिंगापुर ने राष्ट्रीय ध्वज सिंगापुर का आरोहण किया एवं महाशय श्री धर्मपाल जी (चेयरमैन एम.डी.एच. भारत) ने 'ओ३म् ध्वज' का आरोहण किया और उपस्थित सभी आर्यजनों ने ध्वज गान और वैदिक जयघोष से दिशाओं को कम्पित करने वाले एकात्म स्वर से संगठन की मजबूती का एहसास सिंगापुर की धरा को कराया।

समारोह का आगाज दीप प्रज्वलन की सामूहिक प्रक्रिया के पश्चात् हुआ जिसमें दानवीर महानुभाव श्री धर्मपाल महाशय जी, माननीय डॉ० श्री सत्यपाल सिंह, सांसद, भारत सरकार, एवं सांसद श्री इन्द्रजीत सिंह एवं ओ०पी०राय जी के कमलों द्वारा दीप प्रज्वलित किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन दोपहर 1:30 बजे से हुआ और रात्रि 10 बजे तक चला, समारोह में मंच संचालन आचार्य श्री प्रभामित्र जी ने किया। मंच पर उपस्थित भारत वर्ष के मूर्धन्य विद्वान् एवं आर्य समाज के राष्ट्रीय अधिकारियों के द्वारा मंच की शोभा देदीप्यमान हो रही थी। जिसमें सर्वश्री आर्य जगत् भारत के भामाशाह दानवीर महाशय धर्मपाल जी, प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली, माननीय सांसद डॉ० सत्यपाल सिंह, स्वामी देवव्रत आचार्य प्रधान सेनापति सार्वदेशिक आर्यवीर दल, श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल उपप्रधान सार्वदेशिक सभा, श्री प्रकाश आर्य मन्त्री सार्वदेशिक सभा, ब्र० राजसिंह आर्य (प्रधान आ०प्र०सभा दिल्ली), श्री धर्मपाल आर्य (वरिष्ठ उपप्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा), श्री शिवकुमार मदान (उपप्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा), श्री विनय आर्य (महामन्त्री दिल्ली आ०प्र०सभा), श्री राजेन्द्र जी (एम.डी. एच. परिवार), श्री नरेन्द्र मोहन (मन्त्री शुद्धि सभा दिल्ली), श्री दयासागर (पूर्व प्रधान आ०प्र०सभा छत्तीसगढ़), श्री सत्यवीर (पूर्व मन्त्री हरियाणा सभा), श्री सहदेव नागिया (मन्त्री आर्य समाज ग्रेटर कैलाश नई दिल्ली), श्री एस.पी. सिंह आर्य, डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, स्वामी ऋतस्पति (आचार्य गुरुकुल हौशंगाबाद), आचार्य सनतकुमार व आचार्य ज्ञानेश्वर (वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़, गुजरात) व ब्र० नन्दकिशोर एवं अनेक आगन्तुक विद्वान् महानुभावों ने विशेषरुप से सम्मेलन को सम्बोधित किया।

आर्य समाज मॉरिशस के प्रधान श्री बालचन्द तानाकूर जी मन्त्री श्री हरिदेव रामघनी, आस्ट्रेलिया आर्य समाज के प्रधान श्री प्रमोद राय, मन्त्री श्री योगेश आर्य, अमेरिका आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री भुवनेश खोसला जी, कनाडा से श्री हरि वार्ष्णेय, लन्दन से श्रीमती विभा केल एवं अन्य देशों के महानुभाव इस अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन में सम्मिलित हुए।

महासम्मेलन में आर्य समाज की पृष्ठभूमि से जुड़े हुए अनेक विश्वस्तरीय विषयों (मुद्दों) पर चर्चाएँ हुईं। आर्य समाज के प्रचार की गति को बढ़ाने के लिए सुझाव एवं उपदेश प्रस्तुत किए गए। जिनमें मुख्यरूप से तीन मुद्दों पर विश्व के मूर्धन्य विद्वान् महानुभावों ने अपने विचार व्यक्त किए। जिसमें प्रथम दक्षिण एशिया में वैदिक धर्म व संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु सिंगापुर को दक्षिण एशिया का मुख्य कार्यालय बनाया जाए। द्वितीय यह कि- वैदिक धर्म के प्रचारार्थ साहित्य का सृजन क्षेत्रीय भाषाओं में किया जाए जिससे एक भाषा विशेष क्षेत्र में जन सामान्य तक साहित्य का लाभ प्राप्त हो। अंग्रेजी भाषीय क्षेत्रों में साहित्य अंग्रेजी भाषा में ही वितरित किया जाए तभी साधारण जन तक वैदिक ज्ञान का प्रचार होगा। तृतीय यह कि- जिस प्रकार सिंगापुर में वैदिक धर्म की स्थापना और उसके संरक्षण-संवर्धन के प्रयास किए जा रहे है, उनसे प्रेरणा लेकर अन्य देशीय आर्यजन आर्य समाज के ध्येय वाक्य 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' की कसौटी पर सार्थक सिद्ध हो। आर्य समाज सिंगापुर ने, जहाँ अपने आर्य समाज की स्थापना के 100 वर्षों को पूरा किया वहीं पर डी.ए.वी. विद्यालय ने हिन्दी भाषा के शिक्षण के इतिहास के भी शतवर्षों को पूर्ण कर एक नया इतिहास बनाया। महासम्मेलन का कार्यक्रम दो दिनों तक चला। प्रात:काल में सामूहिक रूप से योग, ध्यान, सन्ध्या एवं यज्ञ का आयोजन प्रतिदिन नियम पूर्वक दोनों सत्रों में किया गया। आर्य समाज के प्रधान श्रीमान ओ०पी० राय, श्री अशोक राय उपप्रधान एवं मन्त्री श्री राकेश मिश्रा एवं आर्य समाज सिंगापुर के सभी सदस्यों ने डी.ए.वी. विद्यालय के शिक्षक एवं अधिकारीगण श्री राजेन्द्र बाँगा, राज अग्रवाल, संजय आर्य, श्री रवीन्द्र सिंह व अन्य महानुभावों ने कठिन परिश्रम कर कार्यक्रम को सुचारु रूप से सम्पन्न कराने में पूर्ण तत्परता का परिचय दिया। सांस्कृतिक कार्यक्रम की संयोजिका मान्या रीटा जी की कार्य कुशलता से सांस्कृतिक कार्यक्रम का सुन्दर मंचन प्रस्तुत हुआ, जो मिली-जुली संस्कृति का परिचायक प्रतीत हुआ। समारोह में यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य श्री प्रभामित्र जी ने 'वेद के माध्यम से विश्वशान्ति' स्थापित करने का मूल मन्त्र दिया। ओं "स्वस्ति पन्थामनु चरेम....." मन्त्र के माध्यम से विवेक व ज्ञान की तीन धाराओं में बहने का उपदेश किया जिसमें अहिंसा पालन, दानी एवं ज्ञानी बनकर विश्व में शान्ति स्थापित करने की प्रेरणा दी। महाशय श्री धर्मपाल जी ने अपने उद्बोधन में ऋषि के कार्यों की धूम मचाने का आह्वान किया, जिससे विश्व के प्रत्येक कोने में ऋषि के मन्तव्यों का प्रचार-प्रसार हो और अपने जीवन को ऊँचा बनाएँ। आचार्य राजसिंह आर्य जी ने अपने वक्तव्य में वेद के पठन-पाठन के महत्त्व पर प्रकाश डाला और विश्व के प्रत्येक देश व स्थान पर वैदिक गुरुकुलों का निर्माण और संचालन हो जिससे विश्व को वैदिक ज्ञान का लाभ प्राप्त हो। आचार्य ज्ञानेश्वर जी (रोजड़ भारत) ने अपने उद्बोधन में योग के महत्त्व एवं विशेषताओं को जनमानस तक पहुँचाने का उपदेश, कि- 'योग विद्या' विश्व की सर्वोच्च चिकित्सा प्रणाली भी है जिसके माध्यम से मानव को सांसारिक सुख ही नहीं अनन्त सुख मोक्ष भी प्राप्त होता है। वेद में योग की विद्या का उल्लेख करते हुए दु:खों से छूटने का मार्ग बताया। स्वामी ऋतस्पति जी ने 'वेद में विज्ञान' की अवधारणा को प्रबल अकाट्य प्रमाणों के द्वारा सिद्ध किया कि वेद विश्व विज्ञान का भण्डार है। डॉ० सनतकुमार ने वेद को विश्व की सम्पूर्ण विद्याओं का प्रकाशक बताया। स्वामी देवव्रत आचार्य (प्रधान सेनापति सार्वदेशिक आर्यवीर दल) ने आर्य वीर दल की उपयोगिता महत्त्व एवं आवश्यकता को आर्य समाज की शक्ति और पौरुष के सम्बन्ध में व्याख्या की। जिसमें आर्यवीर एवं वीराँगनाओं की शाखा के माध्यम से नई पीढ़ी में चेतना का संचार हो। कार्यक्रम में भारत से आये अन्य विद्वानों ने अपने वक्तव्य को वेद एवं महर्षि के मन्तव्यों का प्रचार एवं प्रसार के लिए विभिन्न चिंतन एवं विचार प्रदान किए।

कार्यक्रम के दूसरे दिन पूर्वाह्न 11:00 बजे से सायं 6:00 बजे तक कार्यक्रम का समापन समारोह नियम पूर्वक चला। जिसमें भारत एवं अन्य देशों से आये आर्य समाज के प्रतिनिधि, अधिकारी एवं सदस्यों को फूल मालाओं एवं शाल भेंट कर सम्मानित किया गया। सायं 6:00 बजे सम्मान समारोह का विधिवत् समापन हुआ। रात्रि 8:00 बजे से 9:00 बजे तक सभी आर्यजनों की विशेष 'विचार-गोष्ठी' का आयोजन किया गया जिसमें, राष्ट्र एवं विश्व के आर्य समाजों के कार्य कलापों की जानकारी एवं भावी योजनाओं पर विचार-विमर्श हुआ। इस संगोष्ठी में श्री विनय आर्य (महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा) ने एक विस्तृत एवं योजनाबद्ध उद्बोधन प्रस्तुत किया। जिसमें सभी आर्य समाजों के कृत कार्यों एवं आर्य समाज एवं वेद प्रचार की भावी नीतियों पर कार्य करने का सुझाव दिया। जिसमें उन्होंने देश विदेश की क्षेत्रीय भाषाओं में प्रचार-प्रसार हेतु साहित्य सृजन की आवश्यकता पर, एक शृँखलाबद्ध वक्तव्य प्रस्तुत किया जिसको विश्व की सभी आर्य समाजों को क्रिया में लाना होगा। डी.ए.वी. सिंगापुर का हवाला देते हुए उन्होंने विदेशों में भी हिन्दी, संस्कृत शिक्षण संस्थाओं के निर्माण पर कार्य करने के लिए आर्य समाज को अग्रणी भूमिका निभाने का सुझाव दिया। जिससें वैदिक संस्कृति अपने प्राचीन गौरव-गरिमा को पुन: प्राप्त करने में सफल हो।

सभी उपस्थित विद्वान् पदाधिकारीगण एवं अभ्यागत महानुभावों ने सहर्ष विचारों को स्वीकार किया और जयघोष के साथ संगोष्ठी का समापन और सामूहिक रूप से शान्ति पाठ किया गया।

नोट : बैंकॉक सम्मेलन का समाचार अगले अंक में प्रकाशित किया जाएगा।

यज्ञ एवं यज्ञोपरान्त ध्वजारोहण करते महाशय धर्मपाल जी साथ में है श्री धर्मपाल आर्य, श्री ओ.पी. राय, श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल जी एवं अन्य।

प्रो० उमाकान्त उपाध्याय का महाप्रयाण: एक महती क्षति

– डॉ. भवानीलाल भारतीय

कल दूरभाष से कोलकाता के श्री चांदरतन दमाजी ने उपाध्याय के निधन का दु:खद समाचार दिया। उपाध्याय जी से मेरे आधी सदी से अधिक सम्पर्क और स्नेह सम्बन्ध रहा। वे उत्तर प्रदेश के सुलतानपुर जिले के एक संस्कारी ब्राह्मण परिवार में जन्में थे। वैदिक कर्मकाण्ड के प्रति उनका पारिवारिक आकर्षण रहा। आगे चलकर कोलकाता आर्य समाज के वार्षिक अधिवेशनों पर उन्होंने कई दशकों तक आचार्यत्व का दायित्वपूर्ण कार्य संभाला और अपने ही मार्गदर्शन में पं० आत्मानन्द, पं० नचिकेता आदि कई नवीन कर्मकाण्डी पण्डितों को प्रशिक्षित किया। यों वे अर्थशास्त्र के प्राध्यापक थे। किन्तु वेद, संस्कृत तथा शास्त्रों में उनकी गहरी गति थी। उन्होंने वेद मंत्रों के जैसे लोकोपयोगी अर्थ किये हैं, उनसे वैदिक स्वाध्याय में लोगों की रुचि बढ़ी है। अथर्व वेद के पृथ्वी सूक्त का भाष्य इसी कोटि की रचना है। वेदाध्ययन और जीवन में प्रवृत्त होने के अलावा उन्होंने बंगाल आर्य समाज की गतिविधियों और विकास को लक्ष्य बना कर कोलकाता आर्य समाज का इतिहास आर्य समाज के विद्वान् और शास्त्रार्थ आदि अनेक शोध परक ग्रन्थ लिखे हैं। सत्यार्थ प्रकाश दर्पण, सत्यार्थ प्रकाश का कोश ही है।

उपाध्याय जी बहुभाषा विज्ञ थे। हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत और बंगाली में उनकी निर्बाध गति थी। उन्होंने अनेक बंगाली ग्रन्थ भी लिखे हैं। निरन्तर आधी शताब्दी तक कलकत्ता आर्य समाज के मासिक पत्र आर्य संसार का सम्पादन कर उन्होंने आर्य पत्रकार जगत् में एक मानदण्ड स्थापित किया है। जीवन के साथ उपाध्याय जी ने वाणी द्वारा भी वैदिक धर्म का भूमण्डल स्तर पर प्रचार किया था। मेरे उनके निजी सम्बन्ध थे। यदा-कदा सम्मेलन समारोहों तथा कलकत्ता के कार्यक्रमों में उनसे भेंट तथा विचार परिवर्तन के अवसर आते थे। मेरा अमृत महोत्सव जब भी गंगानगर में आयोजित किया गया तो उपाध्याय जी को अध्यक्षता के लिए आमंत्रित किया गया। जिसे उन्होंने प्रेमपूर्वक स्वीकार किया। यों कोलकाता तथा श्रीगंगा नगर की भौगोलिक दूरी कम नहीं है और यह यात्रा काफी कष्टप्रद होती है। एक सात्विक, समर्पित तथा सुशिक्षित विद्वान् का आर्य बौद्धिक जगत् से विदाई लेना एक महती तथा अपूरणीय क्षति है। वे मुझ से बड़े और स्वर्ग का रास्ता भी उन्होंने पहले ही अन्वेषित किया। आगे की पंक्ति में अब हमारा नाम है। उपाध्याय जी का सारा परिवार आर्य समाजी है। बड़े भाई रमाकान्त अनुज श्रीकान्त उपाध्याय तथा भतीजे डॉ. वाचस्पति उपाध्याय उनके परिवार के रत्न हैं।

– 315 शंकर कालोनी
श्रीगंगा नगर (राजस्थान)

केरल के अन्य शहरों में वेद प्रचार के बढ़ते कदम
कश्यपाश्रम कन्नूर में 250 कुण्डीय यज्ञ

आचार्य श्री एम. आर. राजेश के नेतृत्व में कश्यपाश्रम के कन्नूर वेद विचार समिति द्वारा कन्नूर कलेक्ट्रेट मैदान में नवम्बर 1 को जाति लिंग भेद बिना वेद पारायण और 250 अग्निहोत्र यज्ञ का आयोजन किया गया। उसका उद्घाटन करते हुए आचार्य श्री एम. आर. राजेश ने कहा कि वेद पढ़ने का अधिकार हर मनुष्य को है। जीवन में सफल होने के लिए और समाज को अंधविश्वास से मुक्त करने के लिए सभी को वेद अवश्य पढ़ना चाहिए। इसी अवसर पर '**काश्यप-दर्शन**' नामक पत्रिका का प्रकाशन भी हुआ और नवम्बर 16 को कन्नूर में "**वेदों से हिन्दू धर्म की पढ़ाई**" की अगले बैच के उद्घाटन की घोषणा भी की गई। – *आचार्य, कश्यपाश्रम*

गुरुकुल कांगड़ी में आयुर्वेदिक डॉक्टर्स ट्रेनिंग प्रोग्राम

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में आयोजित होने वाले 6 दिवसीय आयुर्वेदिक डॉक्टर्स के लिए ओरियेन्टेशन ट्रेनिंग प्रोग्राम के उद्घाटन सत्र में अखिल भारतीय मोरार जी देसाई योग संस्थान के निदेशक डा० ईश्वर वास्वारेड्डी मुख्य अतिथि के रूप में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि प्राचीन भारतीय योग पद्धति में आहार-विहार की शुद्धता पर बल देकर योग द्वारा बिना दवाइयों के ही रोगी को ठीक करने की बात की गई है। यदि योग के मूल सिद्धान्तों को समझ कर अभ्यास किया जाए तो उससे शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक शुद्धि कर मनुष्य सच्चिदानन्द परमात्मा का साक्षात्कार कर सकता है।

कार्यक्रम के अध्यक्ष कुलपति डॉ० सुरेन्द्र कुमार ने कहा कि हमारे समाज की अवधारणा में डाक्टर भगवान का प्रतिरूप माना गया है। जिस प्रकार भगवान जीवन देता है और रक्षा भी करता है उसी प्रकार की स्थिति डाक्टर की होती है ऐसे में उसकी जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है। आजाद भारत में हम एलोपैथी की आंधी में अन्य चिकित्सा पद्धतियों को भूल गए हैं जबकि इससे पूर्व हमें आयुर्वेद एवं योग ने ही जीवन दिया है।

विशिष्ट अतिथि डॉ० अरुण कुमार त्रिपाठी निदेशक उत्तराखण्ड आयुष विभाग ने कहा कि योग एवं आयुर्वेद, का समवाय सम्बन्ध है ये दोनों एक दूसरे के पूरक हैं दोनों का उद्भव वेदों से हुआ है।

कार्यक्रम में विशिष्ट रूप से प्रो० सुभाष वेदालंकार, प्रो० विवेकी, डॉ० आर. के.एस. डागर, प्रो० राजेन्द्र अग्रवाल, डॉ० प्रदीप कुमार, जोशी, कर्नाटक त्रिपुरा, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, राजस्थान, तथा हरियाणा प्रान्त से आए आयुर्वेद के डॉक्टर्स, उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ० अजय मलिक ने किया।

– डॉ० प्रदीप जोशी, ज.सं.अधि.

दर्शन योग महाविद्यालय रोजड़ गुजरात में
सघन साधना शिविर (1 अक्टूबर 2014 से 30 सितम्बर 2015)

दर्शन योग महाविद्यालय रोजड़ गुजरात में एक वर्षीय **सघन साधना शिविर** का प्रारम्भ स्वामी सत्यपति जी की प्रेरणा से योग विद्या को उन्नत बनाने की परम्परा को समृद्ध करने हेतु शिविराध्यक्ष एवं दर्शन योग महाविद्यालय के आचार्य स्वामी ब्रह्म विदानन्द जी सरस्वती का यह एक अथक प्रयास है कि बुद्धि पूर्वक अभ्यास करने वाले सुशिक्षित वैदिक योग साधक, समाज को प्रेरणा एवं नेतृत्त्व प्रदान करने वाले योग प्रशिक्षक एवं आध्यात्मिक विद्या की रक्षा व वृद्धि में जीवन समर्पित करने वाले अध येता तैयार हों।

शिविर में विशेष रूप से वेद, दर्शन आदि आर्ष ग्रन्थों के आधार पर ध्यान, उपासना का प्रशिक्षक, विवेक-वैराग्य, समाधि की प्राप्ति हेतु निदिध्यासन वर्तमान में इस शिविर में मुख्य रूप से दर्शन योगसाधक शिविरार्थी 28 की संख्या में भाग ले रहे हैं, जिनमें 17 ब्रह्मचारी 4 वानप्रस्थी 2 संन्यासी तथा अन्य 5 साधक-साधिकायें तथा इसके अतिरिक्त विद्यालय के ब्रह्मचारी भी श्रद्धापूर्वक शिविर के अनुशासन का पालन करते हुए वैदिक योग विद्या का प्रशिक्षण ले रहे हैं। – *व्यवस्थापक*

टीवी पर वैदिक प्रश्नोत्तरी का प्रसारण

श्रद्धेय स्वामी सुधानन्द जी महाराज के वैदिक प्रश्नोत्तरी "**सर्वे भवन्तु सुखिनः**" का प्रसारण उड़ीसा के प्रमुख चैनल ओ.टी.वी. पर सोम, मंगल, बुध एवं गुरुवार को प्रात: 6:30 बजे से 7:30 बजे तक सुनकर अमृतरूपी वेदवाणी से लाभ प्राप्त करें।

दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा वरिष्ठ साहित्यकार डॉ० सुन्दरलाल कथूरिया सम्मानित

पुरुषोत्तम हिन्दी भवन में 17 नवम्बर 2014 को दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा आयोजित भव्य सम्मान समारोह में वरिष्ठ साहित्यकार एवं यशस्वी लेखक डॉ० सुन्दरलाल कथूरिया को शॉल, प्रतीक-चिह्न, ग्रंथादि भेंट कर '**सम्मानित साहित्यकार**' के रूप में सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान पूर्व चुनाव आयुक्त श्री जी.बी.जी. कृष्णमूर्ति ने प्रदान किया। उनकी उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए पूर्व महापौर एवं दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष श्री महेश चन्द्र शर्मा ने कहा कि भावनगर विश्वविद्यालय, भावनगर (गुजरात) में हिन्दी-विभाग के आचार्य एवं अध्यक्ष रह चुके डॉ० कथूरिया ने माँ भारती की बहुत सेवा की है। वे प्रतिष्ठित समालोचक, सहृदय कवि, प्रखर चिन्तन, गंभीर निबंधकार, निर्भीक पत्रकार, नि:स्वार्थ समाज सेवी, कुशल प्रशासक, उत्कृष्ट प्रवचनकर्ता, वैदिक विद्वान, शिष्यवत्सल प्राध्यापक एवं कृतकार्य प्रोफेसर हैं। आप 45 स्तरीय ग्रंन्थों के यशस्वी व बहुभाषाविद् लेखक हैं और आप को 70 से अधिक सम्मानों-पुस्कारों से अलंकृत किया जा चुका है। ऐसे कृती विद्वान् को '**सम्मानित साहित्यकार**' के रुप में अभिनन्दित करने में सम्मेलन स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करता है। इस समारोह में बहुत बड़ी संख्या में साहित्यकार, पत्रकार, शिक्षक एवं साहित्य-प्रेमी मौजूद थे। – *योगेश्वरचन्द्र आर्य, प्रचार मन्त्री*

पृष्ठ 2 का शेष

लोकसेवा ही ईश्वर की ....

अब सनातनियों की भक्ति को लीजिए। मैंने एक भाई से पूछा कि सेवा के क्या अर्थ हैं वह खिदमत के अर्थ न कर सका। मैंने कहा कि समय पर किसी मनुष्य की आवश्यकता को पूरा करना खिदमत कहलाता है। अब आवश्यकता किसे कहते हैं? मुझे एक बार अध्यापक ने आवश्यकता का अर्थ बताया कि जिस वस्तु के बिना हमारा जरूरी नुकसान हो उसे जरूरत कहते है। अर्थात् जिस वस्तु के बिना हम रह नहीं सकते वही जरूरत है। यदि हम जल न पिएं तो मर जायें। परन्तु क्या आपने इस बात पर विचार किया है कि जिस ईश्वर की आप जरूरियात (आवश्यकतायें) पूरी कर रहे हैं, उसकी आवश्यकतायें क्या है? हम किसी को प्रसन्न करने के लिये सबसे प्रथम यह देखते हैं कि उसे किस वस्तु की आवश्यकता है। मैं एक मनुष्य के घर अभ्यागत रूप से जाता हूँ । वह मुझसे पूछता है कि आप क्या खायेगें? वह पूछता है कि आप चाय पीवेंगे? मैं कहता हूँ कि चाय मैंने कभी नहीं पी। तब वह कहता है कि अच्छा दूध पीलो। मैंने कहा दूध रात को पीता हूँ, वह कहता है कि अच्छा पूरी खालो, रोटी खालो। मैं कहता हूँ रोटी की जरूरत नही। गर्जेकि वह ऐसी चीज ढूँढना चाहता है जिससे कि वह मुझे प्रसन्न करे। परन्तु कभी चूक भी हो जाती है। भाषा की गलत फहमी हो जाती है। और सेवा बेजा रीति से भी हो सकती है। एक बार लाला लाजपतराय जी गुजरात काठियाबाड़ में गये। वहा उन्हें एक सज्जन ने चाय पर बुलाया। चाय पेश की जब और देने लगे तो लाला जी ने कहा कि काफी है। उन्होंने फिर पूछा फिर लाला जी ने कहा कि काफी है। काफी का अर्थ यह है कि और नही चाहिये परन्तु उन्होंने उसको 'पीने वाली' समझा। और वह काफी बनाकर लाला जी के सामने ले आए। इस प्रकार बेजा तरीके पर भी खिदमत हो सकती है। एक रोगी को बादाम का हलवा खिला दिया जाय तो यह उसकी सेवा नहीं है बल्कि हानिकारक है। एक वृद्ध को यदि कठिन लड्डू दे दिये जाएं तो वह अप्रसन्न हो जाएगा। इसी प्रकार किसी का उदर भरा हुआ हो, उसे खाने के लिए दिया जाए और जो भूखा है उसे न खिलाया जाए यह भी एक गलती है। मूर्ति को हलवा खिलाया जाता है किन्तु वह उस के होंठो के आगे नही जाता, सब जानते हैं। देहली में स्त्रियाँ एक स्थान पर मूर्ति की पूजा करती हैं। वहाँ पर कई पदार्थ खाने के लिये पेश किये जाते हैं। एक बार मुझे उधर से गुजरने का अवसर मिला। देखा स्त्रियाँ मूर्ति के मुख पर हलवा लगा रही हैं। मैंने सोचा चलो इन्हे कुछ उपदेश ही दे चलें। मैंने मूर्ति के समीप जाकर देखा कि मूर्ति के होठों पर हलवा कई दिनों से चिपट कर सूख गया है और लकड़ी की तरह हो गया है। मैंने देवियों से कहा यह तो पहला हलवा भी नहीं खाती और इसे क्यों खिलाती हो देख लो यह कितने दिन का हलवा इस पर लगा हुआ है। देवियाँ देख कर हँस पड़ी। मैंने कहा ये मूर्तियाँ कुछ नहीं खाती। यदि ये खाने लग जावें तो सब से पहले उनका विरोध पुजारी ही करेंगे क्योंकि अगर मूर्तियाँ ही सभी कुछ खा जावें तो पुजारियों को क्या मिले।

परमात्मा पूर्ण है उसे किसी वस्तु की आवश्यकता नही, परन्तु फिर भी कोई लड्डू ले जा रहा है कोई फूल। ईश्वर पूर्ण है और प्रकृति जड़। जो चीज पूर्ण है वह किसी से कुछ से कुछ, नही चाहती वह दूसरों के लिए है प्रकृति न अपने सम्बन्ध में कुछ जानती है, और न किसी के विषय में, किन्तु ईश्वर अपने आप को भी जानता है और दूसरों को भी। एक ईश्वर पूर्ण है और दूसरी प्रकृति। न ईश्वर को किसी चीज की आवश्यकता है न प्रकृति को। उन से कोई चीज ली जा सकती है, उन्हें दी नही जा सकती। आर्य समाजी उपासना करना चाहता है ईश्वर के समीप बैठना चाहता है इसलिए कि ईश्वर से कुछ लेकर उस की खिदमत करें। अब खिदमत, खिदमत की तरह की जाती है। आप एक पंडित जी के घर हैं और एक हाथी का खिलौना भी उनके घर ले जाते हैं। आप पंडित जी के लड़के को वह हाथी देते हैं और कहते है कि- लो बालक! इस पर सवारी करो। पंडित जी बहुत प्रसन्न होंगे और आपका सत्कार करेंगे। परन्तु यदि वही हाथी आप लेकर पण्डित जी से कहे पण्डित जी यह है आप की सवारी के लिये, पण्डित जी अति क्रोध करेंगे। उनकी स्त्री अलग नाराज, बच्चा दूर-दूर। अब हाथी को दोनों अवस्थाओं में एक ही घर में रहना है फिर कारण क्या है कि बच्चे को देने पर पण्डित जी खुश पर जब उन्हें दिया गया तो नाराज।

लोक सेवा ही ईश्वर की खिदमत है। पण्डित को उस हाथी की जरूरत नहीं किन्तु उसके लिये वह अत्यन्त हेय है परन्तु यदि उसे दिया तो वह बड़ा नाराज होगा। यदि उसे किसी वस्तु की आवश्यकता न हो और दी जाय। यदि वही चीज उस के बच्चों को दी जाय तो वह प्रसन्न होगा। और यह उस की सेवा है, भक्ति है। खिदमते खलक भी ईश्वर की उपासना और खिदमत है और अगर उस के बच्चों को लाभ पहुँचेगा तो ईश्वर प्रसन्न होगा। अब आप सब शंका में पड़ जाएंगे कि यदि लोक सेवा ही ईश्वरीय उपासना है तो दो समय सन्ध्या पढ़ने की क्या आवश्यकता है। इसके सम्बन्ध में आप को बतला दूं कि दो समय सन्ध्या पढ़ना जरूरी ही है। सन्ध्या करना अपने आपको खलक की सेवा के लिये तैयार करना है।

(नोट : प्रस्तुत लेख वैदिक विद्वान पं. रामचन्द्र देहलवी जी के एक भाषण का सार है जोकि सार्वदेशिक फरवरी, 1938 के अंक में प्रकाशित हुआ था। पाठकों के अवलोकनार्थ इसे साभार यहां प्रकाशित किया जा रहा है। - सम्पादक)

पृष्ठ 3 का शेष

युक्त विस्तृत ज्ञान के लिए सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ के नवम् समुल्लास को पढ़ना चाहिए जो अत्यल्प मूल्य पर देश भर में व आर्य समाजों से प्राप्त किया जा सकता है। दु:खों से सर्वथा रहित मोक्ष की अवस्था की प्राप्ति के लिए क्या साधन व उपाय करने हैं, अब उस पर विचार करते हैं।

जीवन का एक उद्देश्य भोग व दूसरा अपवर्ग है। भोग के अन्तर्गत हमें अपने प्रारब्ध अर्थात् पूर्व जन्म के पुण्य व पाप कर्मों के फलों को भोगना है। इसके लिए हमें जीवन में आने वाले दु:ख को धैर्य व वीरता के साथ सहन करना है। हमारा यह प्रयास होना चाहिए कि हम सुख में उत्साहित न होकर उसमें समभाव बना कर रखें अर्थात् न सुखी हों और न दु:खी। कर्मों को करते हुए हमें निष्काम या आसक्ति रहित कर्म करने होते हैं। हमें यह व्यक्ति, सामाजिक कार्य व कर्म तो करने हैं परन्तु फल की इच्छा से रहित होकर करने हैं। ऐसा करने में कर्मों में लिप्त न होने के कारण उसका फल नहीं मिलेगा और वह हमारे कर्मों की पूंजी बन जायेगा जो हमारे अपवर्ग व मोक्ष में सहायक होगी। वेदों एवं वैदिक साहित्य के अनुसार हमें सामान्य कर्मों के साथ पांच नित्य कर्म करने हैं। उनमें प्रथम ब्रह्म यज्ञ अथवा सन्ध्या कर्म है जो प्रात: व सायं सन्ध्या वेला में किया जाता है। इसमें ईश्वर के गुणों व उपकारों का ध्यान करना होता है। इसकी विधि महर्षि दयानन्द ने "ब्रह्म यज्ञ या सन्ध्या" शीर्षक से लिखी है जो पंच महायज्ञ विधि पुस्तक का एक भाग है। दूसरा नित्यकर्म दैनिक यज्ञ, अग्निहोत्र या देव यज्ञ कहलाता है इसे भी प्रात: व सायं दोनों समय किया जाता है। इसमें यज्ञ कुण्ड में गोघृत व साकल्य की मन्त्रोच्चारपूर्वक आहुतियाँ देने का विधान हैं। इससे वायु मण्डल की शुद्धि के साथ वर्षा जल की भी शुद्धि होकर हमारे कृषि उत्पादों में गुणात्मक परिवर्तन आता है और अनेक दृष्ट व अदृष्ट आध्यात्मिक लाभ प्राप्त होते हैं। तीसरा यज्ञ पितृ यज्ञ कहलाता है जिसमें माता-पिता-आचार्य-परिवार के सभी वृद्धों व समाज के आदरणीय आयु वृद्ध लोगों की सेवा-सुश्रुषा कर उनको सन्तुष्ट रखना होता है। चौथा दैनिक यज्ञ अतिथि यज्ञ है जिसमें हमें विद्वान् अतिथियों व लोकोपकारी संन्यासियों आदि की सेवा व दान-दक्षिणा आदि से उनका सत्कार होता है जिससे अज्ञान व अविद्या के नाश, विद्या व ज्ञान के प्रसार, सेवा-सत्कार व परोपकार आदि अच्छे कार्यों को बढ़ावा मिले। अन्तिम पाचवां यज्ञ बलिवैश्व देव यज्ञ, नृयज्ञ, भूत यज्ञ या प्राणी यज्ञ कहलाता है। इसमें पशु, पक्षियों व कीट-पतंगों आदि जीव-जन्तुओं को भोजन कराना होता है। यह यथा सामर्थ्य किया जा सकता है। इन कर्मों को करते हुए अपने जीवन व व्यवहार को पवित्र व राग-द्वेष, काम क्रोध आदि से रहित करना होता है। सन्ध्या करते हुए ईश्वर का ध्यान इस स्थिति तक ले जाता है कि उसमें स्थिरता बने और इसकी परिणति समाधि के रूप में हो। समाधि क्या है- शरीर की सभी इन्द्रियां एक प्रकार से विश्राम अवस्था में रहकर जीवात्मा ईश्वर में मग्न होकर दोनों प्राय: एकाकार हो जाये हैं। समाधि के दो भेद होते है एक सम्प्रज्ञात व दूसरी असम्प्रज्ञात समाधि। एक में अपने स्वरूप का ज्ञान रहता है व दूसरी प्रवर अवस्था में अपना भी ध्यान नहीं रहता। यह अवस्था ऐसी होती है कि ईश्वर व जीवात्मा दोनों परस्पर भिन्न होकर भी जीवात्मा कह उठता है- मैं ब्रह्म में हूं, अहं ब्रह्मास्मि अर्थात् ब्रह्म से मेरी साक्षात् भेंट हुई है। सन्ध्या व ध्यान के विस्तृत अध्ययन के लिए महर्षि पतंजलि के योग दर्शन का अध्ययन अवश्य करना चाहिए। योगदर्शन को जानने के लिए अनेक आर्य विद्वानों के भाष्य उपलब्ध हैं।

मुण्डकोपनिषद् (8/40) में समाधि का फल बताते हुए कहा गया कि "भिद्यते हृदय ग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशय:। क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे।।" अर्थात् समाधि अवस्था में ईश्वर का साक्षात्कार होने पर हृदय में विद्यमान सब संशयों की गांठे खुल या टूट जाती हैं जिससे सभी सन्देह अर्थात् संशय नष्ट हो जाते हैं। इसके साथ ब्रह्मज्ञानी उपासक योगी के सब कर्म भी क्षीण हो जाते हैं। हम समझते हैं कि प्रत्येक बुद्धिमान व्यक्ति को अपने जीवन में यह अवस्था प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। समाधि का सिद्ध होना हमारे शास्त्रकारों के अनुसार मोक्ष, मुक्ति या सर्व दु:खों से निवृत्ति का द्वार है।

आत्मा के सम्बन्ध गीता के दूसरे अध्याय के 23वें श्लोक में कहा गया है कि "नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावक: ....न शोषयति मारूत:" अर्थात् इस शरीर के स्वामी जीवात्मा को शस्त्र काट नहीं सकते। आग जला नहीं सकती। पानी गला नहीं सकता तथा वायु जीवात्मा को सुखा नहीं सकती। ऐसा हमारा आत्मा है अर्थात् हम है। यह हमारा परिचय है। धन के होने न होने से आत्मा को कोई विशेष लाभ या हानि नहीं होती। यदि हमने धन कमा लिया व आत्म लाभ, आत्म-ज्ञान अथवा आत्म ईश्वर साक्षात्कार नहीं किया तो समझिए हमने सर्वस्व खो दिया और यदि हमने धन कुछ कम व किंचित भी नही कमाया परन्तु हमने अपनी सभी इन्द्रियों को अपने वश में कर लिया, राग-द्वेष-काम व क्रोध को जीत लिया और ईश्वरोपासना आदि कार्यों को करके समाधि अवस्था को सिद्ध कर लिया तो समझिए कि हमने संसार के बड़े से बड़े धनी से अधिक जीवन को सफल किया है। विचार कीजिए और स्वयं निर्णय कीजिए। सही निर्णय ही जीवन को उसके लक्ष्य तक पहुंचा सकेगा। हम यहाँ यह भी कहना चाहते हैं कि मोक्ष के जिज्ञासु व साधक को मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम, योगेश्वर श्रीकृष्ण तथा महर्षि दयानन्द के जीवनों से प्रेरणा लेनी चाहिए।

एक जिज्ञासु को नियमित रूप से ओ३म् और गायत्री मन्त्र का जप करना चाहिए। जप करते समय इनका अर्थ व इनका भाव मन में उपस्थित रहना चाहिए। जब जितना समय मिले, जप कर लेना चाहिए। इससे मन आध्यात्मिकता रंग में रंग जाता है। इसके साथ ही यज्ञ व हवन के अतिरिक्त भी ओ३म् विश्वानि देव सवितुर्दुरितानि परासुव, आदि 8 मंत्रों का यदा-कदा व खाली समय में अर्थपूर्वक विचार कर जप कर लिया जाये तो इससे जीवन को अध्यात्मिक बनाने में लाभ मिलता है। - ***मनमोहन कुमार आर्य,***

देहरादून-248001

आर्यसमाज कृष्ण नगर दिल्ली-51 का

वेद प्रचार सप्ताह

पूर्णाहुति एवं समापन : 23 नवम्बर

यज्ञ : प्रात: 7 से 8:15 बजे
ब्रह्मा : पं. उदयभानु शास्त्री
प्रवचन : डॉ. ओमदत्त आचार्य
भजन : पं. सन्दीप आर्य
वक्ता : आचार्य कर्ण सिंह जी
वि. अतिथि : श्री धर्मपाल आर्य एवं श्री राजीव आर्य

- राजकुमार शर्मा, मन्त्री

आर्य समाज दाल बाजार लुधियाना में

131वां निर्वाण दिवस सम्पन्न

23 अक्टूबर को महर्षि दयानन्द सरस्वती के 131वें निर्वाण दिवस को समारोह पूर्वक धूम-धाम से मनाया। कार्यक्रम का शुभारम्भ यज्ञ से हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा श्री कर्मवीर शास्त्री ने महर्षि के मन्तव्यों पर चलने का आह्वान किया और समाज में फैली कुरीतियों, अन्धविश्वासों एवं पाखण्डों का विरोध कर वैदिक शुद्ध परम्परा का संचालन करने का संकल्प लिया। - ***आत्मप्रकाश, प्रधान***

ऋषि बोधांक हेतु लेख भेजें

प्रतिवर्ष ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर टंकारा समाचार का ऋषि बोधाङ्क प्रकाशित किया जाता है। आगामी बोधोत्सव 16, 17, 18 फरवरी 2015 को समारोह पूर्वक आयोजित किया जा रहा है और इसी अवसर पर 'टंकारा समाचार' का ऋषि बोधाङ्क प्रकाशित होगा। आप से प्रार्थना है कि आप अपने सारगर्भित अप्रकाशित लेख एवं कविता 30 दिसम्बर 2014 तक भिजवाकर कृतार्थ करें। लेख वेद, स्वामी दयानन्द, योग स्वास्थ्य आदि एवं अन्य जन उपयोगी प्रेरणादायक विषयों पर ही सीमित हों, ऐसा निर्णय किया है। यदि प्रकाशन सामग्री टाईप की हुई हो तो सुविधाजनक रहेगा। इसके लिए मैं आपका अत्यन्त आभारी रहूंगा।- **अजय सहगल (9810035658)**
सम्पादक, टंकारा समाचार

महर्षि दयानन्द निर्वाण पर

सामवेद पारायण महायज्ञ

आर्य समाज फतेहाबाद की कर्मठ कार्यकत्री बहिन सुमन जी आर्या रेहलन व श्रीमान् सुरेश कुमार रेहलन ने महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस एवं परिवार कल्याणार्थ सामवेद पारायण महायज्ञ अत्यन्त श्रद्धापूर्वक सम्पन्न कराया। महायज्ञ के ब्रह्मा पं० प्रद्युम्न शास्त्री ने महर्षि के जीवन-दर्शन पर प्रकाश डाला, यज्ञ की वैज्ञानिकता से अवगत कराया एवं वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार अपने आचरण उत्तम बनाते हुए, अपनी सन्तति को संस्कारवान् बनाने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर आर्य समाज के प्रधान श्री बंशीलाल आर्य, सचिव, श्री राजवीर शास्त्री, अरुण ग्रोवर तथा बहन सुषमा आर्या, सीमा ग्रोवर मधुर भजन संगीत से वातावरण को भक्तिमय बनाया। सभी उपस्थित श्रद्धालुओं ने यज्ञ में आहुति प्रदान की।- ***मन्त्री, आर्यसमाज***

आर्य समाज पंचदीप सम्राट एन्कलेव, पीतमपुरा दिल्ली-34 का

13वां वार्षिकोत्सव

(22 से 23 नवम्बर 2014)

समापन समारोह : 23 नवम्बर, 14
यज्ञ- प्रात: 7:30 से 9:30 बजे
ब्रह्मा - डॉ० देव शर्मा व आचार्य सुखराम जी
संगीत - श्री राजवीर शास्त्री
भजन व प्रवचन- प्रात: 10 से 1 बजे
सम्मान- आचार्य सत्यदेव वेदालंकार व श्री ईश्वर आजाद जी

- आनन्द प्रकाश गुप्ता, प्रधान

आर्य समाज मल्हारगंज इन्दौर मे 131वाँ ऋषि निर्वाण दिवस समारोह

इंदौर स्थित आर्य समाज मन्दिर मल्हारगंज में श्री वीरेन्द्र दत्त ज्ञानी जी की अध्यक्षता में 26 अक्टूबर 2014 को मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा इन्दौर संभाग के समस्त आर्यजनों द्वारा संयुक्त रूप से महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का 131वाँ निर्वाण दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री प्रकाश आर्य जी एवं सभाध्यक्ष श्री वीरेन्द्र ज्ञानी पूर्व न्यायाधीश ने सम्बोधित किया।

- विनोद अहलुवालिया, मन्त्री

आर्य समाज सै०-3,4,5,6 एवं विजय विहार रोहिणी के

'14वें वार्षिकोत्सव पर चतुर्वेद पारायण यज्ञ'

समापन समारोह : 23 नवम्बर, 2014

यज्ञ पूर्णाहुति - प्रात: 10 बजे
वेद सम्मेलन- प्रात: 10:30 से 1 बजे
मुख्य वक्ता- आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री
मुख्य अतिथि- श्री राजेन्द्र आर्य
वि.अतिथि - सर्वश्री राजीव आर्य, धर्मपाल आर्य एवं श्री कुलवन्त राणा।

- प्रकाश चन्द्र आर्य, मन्त्री

आर्य समाज अशोक नगर का

60वाँ वार्षिकोत्सव

समापन समारोह-23 नवम्बर 2014

यज्ञ पूर्णाहुति-प्रात: 9:00 बजे
मुख्य वक्ता- आचार्य राजदेव जी
संगीत- श्री राजबीर जी
भजन प्रवचन-प्रात: 10 से दोपहर 1 बजे
वि. अतिथि- ओ.पी. बब्बर पूर्व विधायक

- प्रकाश चन्द्र आर्य, मन्त्री

आर्य समाज बी.एन. पूर्वी, शालीमार बाग दिल्ली का

35 वां वार्षिकोत्सव

24 से 30 नवम्बर, 2014

यज्ञ भजन उपदेश- प्रात: 7:15 से 9:15
भजन-प्रवचन - रात्रि 7:30-9:30 बजे
ब्रह्मा - डॉ० वेदपाल जी (मेरठ)
भजन - श्री दिनेश दत्त जी

महिला सम्मेलन- 28 नवम्बर, 2014
दोपहर - 2:30 से सायं 5 बजे

आप सपरिवार अधिकाधिक संख्या में पधार कर धर्मलाभ अर्जित करें।

- नरेन्द्र अरोरा, मन्त्री

आर्य समाज कालका जी का

63वाँ वार्षिकोत्सव व ऋग्वेद शतकम् यज्ञ

समापन समारोह 23 नवम्बर 2014

यज्ञ पूर्णाहुति - प्रात: 9:30 बजे
ब्रह्मा- आचार्य अवधेश कुमार शास्त्री
विशिष्ट सम्मेलन- 9:30 से 1 बजे
वि. अतिथि- श्री धर्मपाल आर्य जी (व.उपप्रधान दिल्ली सभा)
मुख्य वक्ता - आचार्य अखिलेश्वर जी
भक्ति संगीत- श्रीमती सुदेश आर्या जी

- राकेश भटनागर, मन्त्री

गुरुकुल आर्यनगर, हिसार का

स्वर्ण जयन्ती वार्षिकोत्सव

गुरुकुल आर्यनगर, हिसार वर्ष 2014 में अपने पचास वर्ष पूरे करने के उपलक्ष्य में एक भव्य स्वर्ण जयन्ती समारोह एवं वार्षिक उत्सव दिनांक- 30/11/2014 से 07/12/2014 तक गुरुकुल प्रागंण में आयोजित कर रहा है। गुरुकुल के यशस्वी **प्रधान स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती (सांसद, सीकर लोकसभा)** के पावन सानिध्य में 30 नवम्बर से अथर्ववेद के मन्त्रों से यज्ञ प्रारम्भ होगा तथा 6 एवं 7 दिसम्बर को विशेष उत्सव आयोजित किया जायेगा। जिसमें देश विदेश से अनेक संन्यासी, राजनेता एवं प्रखर विद्वान् सहित सम्पूर्ण आर्य जगत् हिस्सा लेगा। आप सब परिवार एवं इष्ट मित्रों सहित सादर आमंत्रित है।- ***आचार्य***

'आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा' सम्मानित

गंगाप्रसाद उपाध्याय पुरस्कार के रजत जयंती वर्ष पर इलाहाबाद में आयोजित एक समारोह में वेद विदुषी आचार्या सूर्यदेवी चतुर्वेदा पाणिनि कन्या गुरुकुल वाराणसी को 21000/- रु, स्मृति चिह्न तथा अंगवस्त्र देकर पूर्व न्यायमूर्ति गिरधर मालवीय ने सम्मानित किया। इलाहाबाद वि.वि. की संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो० किश्वर जबी नसरीन ने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि विद्या किसी जाति व व्यक्ति विशेष की बपौती नहीं है, चतुर्वेदा जी की कृतित्त्व ने यह प्रमाणित कर दिया कि नारी अबला नहीं सबला है। - **मन्त्री**

आर्य समाज रोहिणी सै.3,4,5 एवं विजय विहार दिल्ली द्वारा

भव्य शोभायात्रा

आर्य समाज रोहिणी सै०-3,4,5,6 एवं विजय विहार ने गत 16 नवम्बर 2014 को शोभा यात्रा का सुंदर आयोजन किया। शोभा यात्रा में दिल्ली सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, वेद प्रचार मंडल उ-प दिल्ली के प्रधान श्री सुरेन्द्र गुप्ता, महामंत्री श्री जोगेंद्र खट्टर ने भाग लिया। आर्य समाज सै०-5, प्रशांत विहार, सी० पी० ब्लाक, मेन बाजार रानी बाग तथा वैदिक सत्संग मंडल रोहिणी से अनेक आर्यजनों ने शोभा यात्रा में उत्साह पूर्वक भाग लिया। शोभा यात्रा श्री सुरेन्द्र चौधरी की प्रेरणा एवं दिशानिर्देशन में सम्पन्न हुई। - ***मन्त्री***

महिला आर्य समाज हनुमान रोड, वार्षिकोत्सव सम्पन्न

11 नवम्बर 2014 को प्रात: 7:30 बजे श्रीमती प्रेमलता भटनागर की ब्रह्मत्व में यज्ञ का आयोजन किया गया। महिला सम्मेलन में श्रीमती सुनीता पासी ने 'वैदिक विचार धारा' पर प्रकाश डाला तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती प्रकाश कथूरिया (प्रधाना आर्य प्रान्तीय महिला सभा दिल्ली) ने सम्मेलन को सम्बोधित किया। रघुमल आर्य कन्या स्कूल राजा बाजार, रघुमल प्राइमरी स्कूल, डॉक्टर्स लेन और आर्य पब्लिक स्कूल के छात्र/छात्राओं द्वारा ऋषि दयानन्द से सम्बन्धित नाटिकाएँ व गीत प्रस्तुत किए गए। श्रीमती आदर्श सहगल ने मधुर भजन प्रस्तुत किए। श्रीमती स्नेह यादव एवम् श्रीमती प्रमिला गण्डोत्रा द्वारा छात्र/छात्राओं को कार्यक्रम प्रस्तुत करने पर प्रोत्साहन पुरस्कार दिए। समाज की प्रधाना श्रीमती सत्यभामा खन्ना ने उपस्थित बहनों को आशीर्वचन एवम् धन्यवाद दिया। एवम् मन्त्री श्रीमती सुनीता बुग्गा द्वारा वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। - ***श्रीमती सुनीता बुग्गा, मन्त्री, महिला आर्य समाज***

आर्य समाज पटेल नगर के

63वें वार्षिकोत्सव पर यजुर्वेदयज्ञ

समापन समारोह : 23 नवम्बर, 2014

यज्ञ पूर्णाहुति - प्रात: 10:00 बजे
ब्रह्मा -आचार्य रविदत्त जी
कार्यक्रम -प्रवचन -11:30 से 1 बजे
आर्य महिला सम्मेलन -1 दिसम्बर 2014
दोपहर 12:30 बजे से 4:30 बजे तक

- जितेन्द्र आर्य, प्रधान

शोक समाचार

आचार्य रामपाल शास्त्री को भ्रातृशोक

प्रसिद्ध समाज सेवी संस्था मानव सेवा प्रतिष्ठान के संस्थापक व कार्यकर्त्ता प्रधान श्री रामपाल शास्त्री के अनुज भ्राता सुरेश खत्री, जो भारतीय वायुसेना में कार्यरत थे, का 24 अक्तूबर, 2014 को आकस्मिक निधन हो गया। अगले दिन उनके पैत्रक गाँव ईस्माइला की शमशान में पूज्य स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज के गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारियों द्वारा वैदिक रीति से अन्तिम संस्कार सम्पन्न कराया गया। इस अवसर उनके परिजनों के साथ अनेक आर्यसंस्थाओं के पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपनी अश्रुपूर्ण विदाई दी। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ 2 नवम्बर को सम्पन्न हुई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 17 नवम्बर से रविवार 23 नवम्बर, 2014

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 20/21 नवम्बर, 2014

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 19 अक्तूबर, 2014

त्रिभाषा सूत्र में नहीं पढ़ाई जायेंगी विदेशी भाषाएँ

संस्कृत शिक्षक संघ द्वारा दिल्ली उच्च न्यायालय में डाली गई जनहित याचिका के सन्दर्भ में केन्द्र सरकार की ओर से माननीय मुख्य न्यायाधीश की कोर्ट में एफीडेविट प्रस्तुत किया गया, जिसमें शिक्षा नीति 1968, 1986 तथा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 के अनुसार त्रिभाषा सूत्र का पालन करने को कहा है। केन्द्रीय विद्यालय संगठन के आयुक्त को बिना सरकार की अनुमति के असंवैधानिक रूप से त्रिभाषा सूत्र में कक्षा छ: से आठ में विदेशी भाषाओं को पढ़ाने पर आदेश जारी कर शिक्षा नीति का पालन करने को कहा है। ज्ञात हो कि सत्र 2011 से केन्द्रीय विद्यालयों में संस्कृत के स्थान पर जर्मन, फ्रैंच, चीनी तथा स्पेनिश भाषाएँ पढ़ाई जा रही थी। जिस पर आपत्ति उठाते हुए संस्कृत शिक्षक संघ ने एडवोकेट मोनिका अरोड़ा के माध्यम से जनहित याचिका माननीय उच्च न्यायालय दिल्ली में डाली थी। दिनांक: 15/10/2014 को सरकार की ओर से शिक्षा नीति 1968, 1986 तथा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 के पालन का एफीडेविट देने के साथ ही केस का निपटारा हो गया। अब विदेशी भाषाओं को त्रिभाषा सूत्र में नहीं पढ़ाया जा सकेगा।

– **डॉ. वी. दयालु (महासचिव)**
संस्कृत शिक्षक संघ दिल्ली

आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी में

प्रेरणादायक कार्य

वैदिक धर्म से अनभिज्ञ व्यक्तियों को आर्य समाज एवं वेद की संस्कृति की मुख्य धारा से जोड़ने का प्रेरणादायक कार्य कर रहा है– आर्य समाज बाहरी रिंग रोड विकासपुरी। आर्य समाज के प्रधान श्री वेदप्रकाश जी ने बताया कि गत 09 नवम्बर 2014 को आर्य समाज में 20 वर्षों से कार्यरत सफाई कर्मचारी श्री रामबीर अपने पूरे परिवार के साथ मुख्य यजमान बनकर यज्ञ सम्पन्न कराया। यजमान श्री रामबीर उनकी धर्मपत्नी श्रीमती वीरवती पुत्र श्री अर्जुन व श्रीमती निर्वेश कुमारी व रिंकू पुत्री अर्चना व पूनम पौत्र नितेश नाती मानव सभी ने उपस्थित रहकर यज्ञ में आहुति प्रदान की। प्रत्येक रविवारीय साप्ताहिक सत्संग में ऐसे व्यक्तियों को यजमान बनाया जाता है। जो धर्म और यज्ञ संस्कृति से अनजान रहें है। ऐसे ही दम्पति श्री मनोहर लाल आहुजा व श्रीमती पूजा आहुजा ने 16 नवम्बर को यज्ञमान बनकर आहुति प्रदान की।

– *वेदप्रकाश, प्रधान (9873110044)*

कैलेण्डर वर्ष 2015

मूल्य 1000/-रुपये सैंकड़ा

सम्पर्क करें – 09540040339

प्रतिष्ठा में,

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के उत्पादों पर

30% की विशेष छूट

आंवला कैंडी	आंवला कैंडी	च्यवनप्राश स्पेशल
(500 ग्राम) ~~160/-~~	(1किलो) ~~294/-~~	(1किलो) ~~286/-~~
110/-रु.	210/-रु.	200/-रु.

इसके अलावा सभी उत्पादों पर 10% की छूट। प्राप्त करने/अधिक जानकारी के लिए 9540040339 पर श्री विजय आर्य जी से सम्पर्क करें।– महामन्त्री

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टेलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह